

॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ गोष्ठयविष्टव्याघ्रादेरहिंसागवामेवहिंसाभवति अतएतयोर्मध्ये धर्मस्यपरिग्रहार्तत्राणंश्रेयान् ॥ ४९ ॥ मस्तकंभ्रिदंतिशृंगद्विर्माभूदिति नस्तकांनिति पाठेनासिकाः ॥ ५१ ॥ जर्जरीकृतेदंडेन तदभावेभारवहननादिकार्येनस्यादतःपुराणमेवधर्ममाचर नत्वन्नप्रवाहायातंहिसादिदोषमवेक्षस्वेतिभावः ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ मन्युःदैव्यं ॥ ५४ ॥ आततायीशन्नपाणिः मन्युः

नचोष्टानवलीवर्दानाश्चाश्वतरगर्दभाः ॥ युक्तावेहयुयानानियदिदंडोनपालयेत् ॥ ४१ ॥ नप्रेष्यावचनं कुर्यान्नवालाजातुकर्हिचित् ॥ नतिष्ठेद्युवतीधर्मं यदि दंडोनपालयेत् ॥ ४२ ॥ दंडेस्थिताः प्रजाः सर्वाभयं दंडे विदुर्बुधाः ॥ दंडे स्वर्गो मनुष्याणां लोकोयं सुप्रतिष्ठितः ॥ ४३ ॥ नतत्र कूटं पापं वा च नावापि हस्यते ॥ यत्र दंडः सुविहितश्चरत्यरिविनाशनः ॥ ४४ ॥ हविः श्वाप्रलिहदृष्ट्वा दंडं श्रेन्नोद्यतो भवेत् ॥ हरेत्काकः पुरोडाशं यदि दंडो न पालयेत् ॥ ४५ ॥ यदीदं धर्मतो राज्ञ्यं विहितं यद्यधर्मतः ॥ कार्यस्तत्र न शोको वै भुंक्ष्वभोगान्यजस्व च ॥ ४६ ॥ सुखेन धर्मं श्रीमंतश्चरंति शुचिवाससः ॥ संवर्षतः फलैर्दानैर्भुजानाश्चान्नमुत्तमं ॥ ४७ ॥ अर्थे सर्वे समारंभाः समायत्तान संशयः ॥ सच दंडे समायत्तः पश्य दंडस्य गौरवं ॥ ४८ ॥ लोकयात्रार्थमेव ह धर्मं प्रवचनं कृतं ॥ अहिंसासाधुर्हिंसेति श्रेयान् धर्मं परिग्रहः ॥ ४९ ॥ नात्यंतं गुणवत्किंचिन्न चाप्यत्यंतं निर्गुणं ॥ उभयं सर्वकार्येषु हस्यते साध्वसाधुवा ॥ ५० ॥ पशूनां वृषाणां छित्वा ततो भिदंति मस्तकं ॥ वहंति बहवो भारान्यभ्रंति दमयंति च ॥ ५१ ॥ एवं पर्याकुले लोके वितथैर्जर्जरीकृते ॥ तैस्तैर्न्यायैर्महाराजपुराणंधर्ममाचर ॥ ५२ ॥ यजदेहि प्रजारक्ष धर्मं समनुपालय ॥ अमित्रान् जहिकैतिय मित्राणि परिपालय ॥ ५३ ॥ माचते निघ्नतः शत्रून् मन्युर्भवतु पार्थिव ॥ नतत्र किं त्विषं किंचित्कर्तुं भवति भारत ॥ ५४ ॥ आततायी हियो हन्यादाततायिनमागतं ॥ न तेन भ्रूणहासस्यान्मन्युस्तं मन्युमाच्छति ॥ ५५ ॥ अवध्यः सर्वभूतानां मंतराल्मान संशयः ॥ अवध्ये चात्मनिकथं वध्यो भवति कस्य चित् ॥ ५६ ॥ यथा हि पुरुषः शालांपुनः संप्रविशेन्न वां ॥ एवं जीवः शरीराणि तानि तानि प्रपद्यते ॥ ५७ ॥ देहानुराणानुस्तज्य नवान्सं प्रतिपद्यते ॥ एवं मृत्युमुखं वैशंपायन उवाच अर्जुनस्य वचः श्रुत्वा भीमसेनोत्यमर्षणः ॥ धैर्यमास्थाय ते जस्वी ज्येष्ठभ्रातरमब्रवीत् ॥ १ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

क्रोधः मन्युं क्रोधमाच्छति आसर्वतः कच्छति प्राप्नोति मन्युः कर्तानाहं कर्तेति श्रुतेस्तत्र न भ्रूणहा भवतीत्यर्थः ॥ ५५ ॥ वस्तुतस्त्ववध्य एव आत्मा देहस्तु शालावदनात्मा तेन देहेन देहे निहेतेनात्मा हातावावध्यो वेत्याह अवध्य इत्यादिना ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ इति शां० रा० नै० भा० पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥